शिकारी, राजा और तोता

एक बार की बात है जब एक राज्य में एक बल्लू नाम का एक शिकारी था। वह एक दिन सुबह गांव से शिकार के लिए निकलता है, सुबह से शाम हो जाती है, लेकिन उसे कोई शिकार नहीं मिलता। अंत में घर वापस आते समय रास्ते में उसे एक आम का पेड़ दिखाई देता है।

बल्लू पेड़ के नीचे कुछ समय आराम करने का निर्णय लेता है। सोने से पहले वह अपना जाल पेड़ के नीचे फैलाकर कुछ देर के लिए सो जाता है। कुछ समय बाद जब वह उठता है तो देखता है कि एक सुंदर तोता उसके जाल में फंस गया है ।

बल्लू को देखकर तोता बोला मैं बहुत छोटा पक्षी हूं। कृपया मुझे जाने दीजिये। मेरे छोटे छोटे बच्चे हैं। बल्लू हैरान था कि यह खूबसूरत तोता इतनी अच्छी बात कैसे कर सकता है। उसे तोते के लिए दुःख हुआ और उसने सोचा क्यों न इसे बेच दू, जिससे तोते की जान भी बच जाएगी और मुझे कुछ पैसे भी मिल जायेंगे।

शिकारी तोते को बाज़ार ले गया। वहा तोते की नज़र अमरूद पर पड़ी । तोता कहने लगा अमरुद-अमरुद! फल बेचने वाले को उसकी आवाज बहुत पसंद आई और उसने तोते को खरीदने की ठान ली।

फल बेचने वाले ने शिकारी से तोता खरीद लिया। फल बेचनेवाला बाजार में तोते को अपने साथ रखता था, ताकि वह अधिक ग्राहकों को अपनी दुकान पर आकर्षित कर सके।

एक दिन राज्य के राजा निरीक्षण के लिए बाजार गए । राजा को देखते ही तोता बोला राजा की विजय हो, राजा की विजय हो! राजा को फल बेचने वाले का सुंदर और बोलने वाला तोता बहुत पसंद आया। राजा ने फल बेचने वाले को बहुत सारे पैसे दिए और तोता खरीद लिया।

राजा अपने महल में तोते को हर समय अपने पास रखते थे। पर कुछ दिनों बाद तोता उदास सा रहने लगा। जब राजा ने तोते से उसकी उदासी के बारे में पूछा, तो उसने अपना सारा किस्सा राजा को बताया। दूसरे दिन ही राजा ने राजमहल की छत पर जाकर आकाश में तोते को उड़ा दिया।

तोता उड़ते हुए कहने लगा राजा का शुक्रिया, राजा का शुक्रिया! तोता उड़ता हुआ जंगल में अपने बच्चों और परिवार के पास चला गया ।